“संस्कृतवाङ्मय के योगसूत्र और योगवासिष्ठ के सिद्धान्तों का समालोचनात्मक और तुलनात्मक अध्ययन”

“A critical and comparative study of the doctrines of Yogasutra and Yogavasishtha in Sanskrit Scriptures”

राँची-विश्वविद्यालय के मानविकी सङ्काय अन्तर्गत *डी.लिट.* उपाधि के लिये प्रस्तुत

शोधप्रस्ताव – The Synopsis

Proposed for the award of D.Litt. Degree at

Ranchi University, Ranchi, Jharkhand – 834001

मार्गदर्शिका

प्रो. अर्चना कुमारी दुबे
अध्यक्षा, संस्कृतविभाग
राँची-विश्वविद्यालय, झारखण्ड

अनुसन्धाता

डॉ. नेहल नरेन्द्रकुमार दवे
(Ph.D., M.Phil. in Sanskrit)

वर्ष –२०२३

क्रम	**विषय**	**पृष्ठ**
1.	प्रस्तावना	1
2.	योगसूत्र का परिचय	1
3.	योगवासिष्ठ का परिचय	3
4.	संशोधन का उद्देश्य और प्रेरणास्रोत	4
5.	परिकल्पना	5
6.	संशोधन प्रारूप और पद्धति	5
7.	दत्तांश संकलन के लिये उपयोगी साधन	6
8.	संशोधन की आवश्यकता	6
9.	संशोधन की समसामयिकता और सामाजिक आवश्यकता	7
10.	वर्तमान ज्ञान में योगदान	7
11.	भविष्य की सम्भावनाएँ	9
12.	संशोधन की अवधि	9
13.	सन्दर्भग्रन्थसूची	10
14.	जालस्थान	10

प्रकरणों का विभाजन

प्रकरण 1 -योगपरम्परा का उद्भव एवं विकास

1.1 योग का शाब्दिक अर्थ

1.2 योगकेप्रवर्तककौन?

1.3 योगकी गुरुपरम्परा

प्रकरण 2 - पातञ्जल योगसूत्र के सिद्धान्त एवं वैशिष्ट्य

प्रकरण 3 - योगवासिष्ठ के स्वरूप, सिद्धान्त एवं वैशिष्ट्य

प्रकरण 4 - योगसूत्र एवं योगवासिष्ठ का तुलनात्मक अध्ययन

प्रकरण 5 - आधुनिक परिप्रेक्ष्य में योगसूत्र एवं योगवासिष्ठ की प्रासंगिकता

5.1 योगसूत्र एवं योगवासिष्ठ का आधुनिक योग परम्परा पर प्रभाव - विहङ्गावलोकन

प्रकरण 6 - सारांश

सन्दर्भग्रन्थसूची

परिशिष्ट

०.१ - प्रस्तावना/Introduction

संस्कृतवाङ्मय का विस्तार अनन्त ही है। यतः अब तक हमारे द्वारा संस्कृतवाङ्मयरूप समुद्र का विस्तार कितना है, ये जाना नहीं जा सका। तथाऽपि हम इस वाङ्मय को विविध विभागों और प्रविभागों में विभक्त हुआ देखते हैं। यथा – वैदिङ्कवाङ्मय, साहित्यवाङ्मय, व्याकरणवाङ्मय, शिल्पवाङ्मय, नृत्यवाङ्मय, सङ्गीतवाङ्मय इत्यादि अनेकानेक विस्तार है। तत्र दर्शनवाङ्मय भी मुख्य माना जाता है। दर्शनवाङ्मय में मुख्यतः ९ दर्शन अन्तर्भूत होते हैं, उन में आस्तिक षड्-दर्शन और तीन नास्तिक गिने जाते हैं। आस्तिकदर्शन में योगदर्शन महत्त्वपूर्ण है। योगदर्शन का सभी वाङ्मयों में विचार प्राप्त होता है, क्योंकि योगदर्शन सभी अन्य विभागों में व्याप्त दिखता है।महाकवि कालिदास कुमारम्भवमहाकाव्य में लिखते हैं कि–**"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्"**।शरीर ही धर्म के पालन में मुख्य साधन है।

अतः किसी भी काव्य में योग का वियोग देखा नहीं जाता, उससे विपरीत सर्वत्र योग की मूलभावना का दर्शन होता है। संस्कृतवाङ्मय के विस्तार को धाराओं में विभक्त किया जा सकता है, परन्तु सीमित नहीं किया जा सकता। योगसूत्र और योगवासिष्ठ संस्कृतवाङ्मय के अमूल्यरत्न हैं। इसीलिए महारामायण नाम से प्रसिद्ध योगवासिष्ठ जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान अपने गर्भ में सुरक्षित रखता है। वैसे ही योगसूत्र भीअतीव सहजता से मनुष्यों की मानिसक, शारीरिक और आध्यात्मिकसमस्याओं का समाधान लाघवपूर्णतयाकरता है। परन्तु विहङ्गावलोकन से देखा जा सकता है कि अब तकइन दोनों ग्रन्थों का तुलनात्मक अध्ययन हुआ नहीं है, परन्तु यदि इन ग्रन्थों का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन किया जाए, तो निश्चित ही अनेक उदाहरण योगवासिष्ठ से प्राप्त हो सकते हैं, जो योगसूत्र कोसमझाने मेंसहायक सिद्ध होंगे। उससे भी विशेष उन दोनों ग्रन्थों का समालोचन करके आध्यात्मिक-लक्ष्ययुक्त और स्वास्थ्येच्छुक लोगअपने अनेक प्रश्नों के उत्तर पा सकते हैं। योगसूत्र का गंभीर ज्ञान तथा योगवासिष्ठ का विस्तृत विवेचन एक दृष्टि से परस्पर पूरक है। तो उनका तुलनात्मक और समाचोलनात्मक अध्ययन अनेक विषयों को स्पष्ट कर सकता है।

०.२–योगसूत्र का परिचय

योगदर्शनके चार पाद हैं और १९५ सूत्र हैं । समाधिपादमें ५१, साधनपादमें ५५, विभूतिपादमें ५५ और कैवल्यपादमें ३४।इन पादों में योग अर्थात् ईश्वर-प्राप्ति के उद्देश्य, लक्षण तथा साधन के उपाय या प्रकार बतलाये गये हैं और उसके भिन्न-भिन्न अंगों का विवेचन किया गया है। इसमें चित्त की भूमियों या वृत्तियों का भी विवेचन है। इस योग-सूत्र का प्राचीनतम भाष्य वेदव्यास

का है, जिस पर वाचस्पति का वार्तिक भी है। **योगशास्त्र नीति विषयक उपदेशात्मक काव्य की कोटि में आताहै।**

यह धार्मिक ग्रंथ माना जाता है परन्तु इसका धर्म किसी देवता पर आधारित नहीं है। यह शारीरिक योग मुद्राओं का शास्त्र भी नहीं है। यह आत्मा और परमात्मा के योग या एकत्व के विषय में है और उसको प्राप्त करने के नियमों व उपायों के विषय में। यह अष्टांग योग भी कहलाता है क्योंकि अष्ट अर्थात् आठ अंगों में पतंजलि ने इसकी व्याख्या की है। ये आठ अंग हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ।अनेक परवर्ती धार्मिक व्यक्तियों ने इनपर टीका की और इस शास्त्र के विकास में योगदान किया। विशेष रूप से जैन धर्म के हेमचंद्राचार्य ने अपभ्रंश से निकलती हुई हिंदी में इसको वर्णित करते हुए बड़े संप्रदाय की स्थापना की। उनके संप्रदाय के अनेक मूलतत्व पतंजलति योगसूत्र से लिए गए हैं। स्वामी रामदेव, महेश योगी आदि अनेक धार्मिक गुरुओं ने योग सूत्र के एक या अनेक अंगों को अपनी शिक्षा का प्रमुख अंग बनाया है।

०.३–योगवासिष्ठ का परिचय

योगवासिष्ठ आहत्य 6 प्रकरणों (४५८ सर्गों) का विशाल ग्रन्थ है। योगवासिष्ठमें श्लोकों की संख्या २९ सहस्र मानी जाती है। महाभारत के पश्चात् यह द्वितीयमहाकाय ग्रन्थ है।

इसके प्रकरणों के नाम निम्न प्रकार से है।वैराग्य-प्रकरण (३३ सर्ग),मुमुक्षुव्यवहार-प्रकरण (२० सर्ग),उत्पत्ति-प्रकरण (१२२ सर्ग),स्थिति-प्रकरण (६२ सर्ग),उपशम-प्रकरण (९३ सर्ग), तथानिर्वाण-प्रकरण (पूर्वार्ध १२८ सर्ग और उत्तरार्ध २१६ सर्ग)।

वाल्मीकि रामायण से लगभग चतुःसहस्र अधिक श्लोक होने के कारण इसका 'महारामायण' नामाभिधान सर्वथा योग्य लगता है। इसमें रामकी जीवनी न होकर भगवान राम द्वारा दिए गए आध्यात्मिक उपदेश हैं।

प्रथम वैराग्य प्रकरण के वर्णनानुसार उपनयन संस्कार के पश्चात् राम अपने भाइयों के साथ गुरुकुल में अध्ययनार्थ पहुंचे। अध्ययन समाप्ति के पश्चात् तीर्थयात्रा से प्रत्यागमन के समय राम में विरक्ति उत्पन्न हुई। महाराज दशरथ की सभा में उन्होंने कहा कि वैभव, राज्य, कलेवर और आकांक्षा का क्या हीसार्थक्य है। कुछ ही दिनों में महाकाल इन सब कोनिष्ट करने वाले हैं। अपनी मनोव्यथा के निवारण के लिए उन्होंने अपने गुरु वसिष्ठ और विश्वामित्र निवेदन किया। दूसरे मुमुक्षुव्यवहार प्रकरण में विश्वामित्र की सूचना के अनुसार वशिष्ठ ऋषि ने उपदेश दिया है। ३-४ और ५ वें प्रकरणों में संसार की उत्पत्ति, स्थिति और लय की उत्पत्ति वर्णित है। इन प्रकारणों में अनेक दृष्टान्तात्मक आख्यान और उपाख्यान निवेदन किये गए हैं। छठे प्रकरण का पूर्वार्ध और

उत्तरार्ध में विभाजन किया गया है। इसमें संसारचक्र में फँसे हुए जीवात्मा को निर्वाण अर्थात् निरतिशय आनन्द की प्राप्ति का उपाय प्रतिपादित किया गया है।

०.४ –संशोधन का उद्देश्य और प्रेरणास्रोत / Objective of the investigation and Motivation

सम्पूर्ण संस्कृतवाङ्मय पुरुषार्थचतुष्ट के माध्यम से आत्मा की उन्नति के मार्ग कोबताता है। काव्यरसिक भी जन्म और मृत्यु के विषय में जागरूक दिखते हैं। यथा –

मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः ।
क्षणमप्यवतिष्ठते श्वसन् यदि जन्तुर्ननु लाभवानसौ ॥रघुवंशम् (८/८७)

आत्मा का अमरत्व सर्वदा स्मरण रक्खा जाता है। शरीर के अमरत्व को तो विकृति समझा जाता है। शरीर में प्राण का उपस्थिति होनी ही महासन्तोष का विषय है। अतः रसशास्त्र में निमज्जित जन भी माया के पर जानाचाहता है।कहा भी है रघुवंश में कालिदास ने–

अथ काश्चिदजव्यपेक्षया गमयित्वा समदर्शनः समाः।
तमसः परमापदव्ययं पुरुषं योगसमाधिना रघुः॥८.२४॥

उसके बाद प्राणीओं में समदर्शन करने वाला रघु अपने पुत्र के आग्रह पर कुछ समय प्रासाद में रुककर योग बल से अविद्या के परे विद्यमान परमात्मा में विलीन हो गया।

इसीप्रकार मोक्षपुरुषार्थ के लिये संस्कृतवाङ्मय केयोगसूत्र और योगवासिष्ठमहत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। जो व्यक्ति आजीवन सांसारिक रस में निमज्जित (डुबा हुआ)रहता है, वहकभी न कभी तो योगमाध्यम सेअपनी आध्यात्मिक उन्नति की आकाङ्क्षा करता ही है। परन्तु बहुधा समाज मेंरहकरभी राग और द्वेष की धारा में बहता हुआ व्यक्ति योगमार्ग सेमन की शान्ति चाहता है। इस स्थिति में योगवासिष्ठ केकाव्यरस से परिपूर्ण उदाहरण सहायक सिद्ध होते हैं। उससे अधिक गाम्भीर्यपूर्णतया उन उदाहरणों के स्मरण में और क्रियान्वय में योगसूत्र सहायता करता है। एवं समाज योगमार्ग से स्वास्थ्यलाभ, समता और परमगति प्राप्त कर सकता है। अतः निम्न अनुसार उद्देश्य हैं -

1) योगसूत्र में लाघवपूर्ण जो यौगिक सिद्धान्त हैं, उन सिद्धान्तों को स्पष्ट करने वाले योगवासिष्ठ के सिद्धान्तोंको खोजना और दोनों का समालोचन करना...
2) दोनों ग्रन्थों में तुलनात्मक दृष्टि से साम्यता और भेद का समालोचन करना...
3) दोनों ग्रन्थों में विद्यमान समाजोपयोगी और स्वास्थ्यकर (मानसिक-शारीरिक-आध्यात्मिक) सिद्धान्तों का क्रियान्वय करने के लिये उचित मार्ग खोजना... ताकि समाज और साधक उन सिद्धान्तों का अपने जीवन में उपयोग कर सके।

4) योगसूत्र और योगवासिष्ठ उस परमकैवल्य को उपस्थापित करने का प्रयास करते हैं, जो मोक्षपुरुषार्थ की सिद्धि माना जाता है। अतः दोनों ग्रन्थों की कैवल्य अथवा मोक्ष की व्याख्या का समालोचन करना....
5) योगचिकित्सा, योग-प्रशिक्षण और योगसाधना में दोनों ग्रन्थों का अनन्य महत्त्व है, परन्तु दोनों ग्रन्थों के सैद्धान्तिक तुलना उपलब्ध नहीं है। अतः दोनों ग्रन्थों कीसिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन करना...
6) योगदर्शन द्वैतवादी है या अद्वैतवादी है इस प्रश्न को सतर्क उदाहरण से सिद्ध करने का प्रयास करना...

इस अध्ययन को करने में प्रेरणास्रोत योगसूत्र की गहनता है। योगसूत्र में ऐसी अनेकानेक बाते हैं, जो उदाहरण के माध्यम से समझाई जानी चाहिए, क्योंकि अधिकतर बातें सामान्य पाठक या विद्यार्थीओं के लिये अनुभव का विषय नहीं होती है। ऐसे में सूत्र को समझने में सर्वदा कोई न कोई भ्रम या अन्तर्विरोध रह ही जाता है। योगसूत्र के विद्यार्थीओं और जिज्ञासुओंके लिए योगसूत्र और योगवासिष्ठ के गहनतम सिद्धान्तों का उदाहरण शैली में समालोचन करना ही इस विषय के चयन में प्रेरणाबल है।

०.५ –परिकल्पना/Hypothesis

Social laboratory अर्थात्, समाजरूप प्रयोगशाला में योगसूत्र और योगवासिष्ठ के सिद्धान्तों का घटना और कथाओं के माध्यम से परीक्षण किया जाएगा, जिससे योगसूत्र में जिन सिद्धान्तों को बताया गया है, उन सिद्धान्तों का योगवासिष्ठ में कथा अथवा उदाहरण के माध्यम से प्राप्त सिद्धान्तों मेंक्रियान्वयन करने का प्रयास किया जाए। इस प्रकार तुलना करके समालोचनात्मक अध्ययन सम्भव होगा। अतः यहाँ परिकल्पना ये है कि –

1) योगसूत्र में उपस्थापित सिद्धान्तों का समर्थक उदाहरण और कथा योगवासिष्ठ में भी प्राप्त होगी।
2) योगसूत्र में उपस्थापित सिद्धान्तों को अधिक विस्तार से समझाने वाले योगवासिष्ठ के सिद्धान्त मिलेंगे।
3) योगसूत्र और योगवासिष्ठ के सिद्धान्तों में विरोधाभास दिख सकता है।
4) योगसूत्र और योगवासिष्ठ के सिद्धन्तों का कथाओं और विचारों से प्रयोग किया जा सकता है।
5) मनोवैज्ञानिक रोगों के लिये उपयुक्त सिद्धान्तों का क्रियान्वय मार्ग बता सकते हैं।
6) हठयोग अथवा अष्टाङ्गयोग में प्राप्त शारीरिक क्रिया के सिद्धान्तों का क्रियान्वय करने का मार्ग बताया जा सकता है।

०.६ - संशोधनप्रारूप और पद्धति / Research Design and Methodology

यह संशोधन तुलनात्मक और समालोचनात्मक पद्धति से किया जाएगा। गुणात्मक शोध प्रारूप संख्यात्मक दत्तांश के बिना संदर्भ, अर्थ और मानवीय अनुभवों पर जोर देते हुए सामाजिक घटनाओं की जांच और समझने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण है। यह सामान्यतः समृद्ध, गहन जानकारी इकट्ठा करने के लिए कथा, घटना और संवाद सामग्रीविश्लेषण जैसी विधियों को नियोजित करता है। यहाँ उन सबका चयन करने के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूने का उपयोग किया जाएगा, जो शोध प्रश्न में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। गुणात्मक अनुसंधान लचीला और पुनरावृत्तीय है, जो जानकारी के विश्लेषण के दौरान नए विषयों और अवधारणाओं के उद्भव की अनुमति देता है। अंततः, इसका उद्देश्य अध्ययन के अन्तर्गत विषय की सूक्ष्म समझ उत्पन्न करना, सिद्धांत विकास में योगदान देना या व्यावहारिक अनुप्रयोगों को सूचित करना है।

०. ७ - दत्तांश संकलन के लिये उपयोगी साधन /Tools to be used in the collection of data

१) अवलोकन (Observations) : घटनाओं और संवादों के माध्यम से मनुष्य के व्यवहारों, अन्योन्यक्रियाएँ औरपरिप्रेक्ष्य का अवलोकन औरअभिलेखन करकेसामाजिकघटना अनुसार प्रत्यक्षदत्तांश (डेटा)प्रदान किया जाएगा।

२) प्रलेखों का विश्लेषण (Document Analysis) : प्रलेख, ग्रन्थ इत्यादि का विश्लेषण करके गुणात्मकसूचनाओं को एकत्रित किया जाएगा। जैसे लिखितसामग्रीओं अथवा ऐतिहासिक योगवासिष्ठ जैसे ग्रन्थों मं वर्णित घटनाओं का विश्लेषण किया जाएगा।

३) योगगुरुओं का साक्षात्कार (Interview of Yogis) : यह एक स्वाभाविक विषय है कि योग के जानकार और जन्मों से योग की साधना करने वाले योगीओं में बहुत अन्तर होता है। अतः भवप्रत्यय/उपायप्रत्यय योगीयों से यदि मिलने का सौभाग्य हुआ, तो अवश्य ही उनका साक्षात्कार करके इस संशोधन को अधिक अधिकृत बनाने के प्रयास होगा। विडियो, संवाद-श्रव्य अथवा अनुभव लेखन के माध्यम से उसे परिशिष्ट में जोडा जाएगा।

०.८ - संशोधन की आवश्यकता / Significance of the study

इस अध्ययन से जटिल आध्यात्मिक अनुभवों और व्यवहारों के अवगमन और बोध की क्षमता मिलती है, जिससे अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है, जो विभिन्न क्षेत्रों में निर्णय लेने, नीतियों और प्रथाओं में परिष्कार कर सकती है। यह अद्वितीय दृष्टिकोणों और मतों को प्रकट करता है, जो सामाजिक मुद्दों की अधिक समावेशी और समग्र समझ में योगदान देता है। यह अनुसंधान योगसूत्र और योगवासिष्ठ के ज्ञान में अंतर को कम करके उनके परस्पर पूरक ज्ञान बनाने में सहायता करेगा,

वास्तविक विश्वऔर आध्यात्मिक विश्वके मध्य जो खाई दिखती है, उसके लिये व्यावहारिक समाधान और स्पष्ट अंतर्दृष्टिरूप सेतु निर्माणकरने का प्रयास होगा।

०.९ -संशोधन की समसामयिकता और सामाजिक आवश्यकता /Contemporariness of the subject and it's need for Society

आज विद्यार्थी और जिज्ञासु समाज सारगर्भित बातों को उदाहरण से समझना चाहता है और उसके अनुसार अपने और अन्यों के व्यवाहर में परिवर्तन कर सकते हैं। अतः वर्तमान समाज के लिये ये आध्यात्मिक संशोधन में सहायक होगा। यदि समाज में इसकी आवश्यकता को देखा जाए, तो बाबाओं और कथाकथित वक्ताओं का ताता लगा है। वास्तविक और निष्पक्ष ज्ञान की खोज में ही मनुष्य का अल्प आयुष्य नष्ट हो जाता है, ऐसे मैं शास्त्रीय ग्रन्थों की तुलना करके समालोचनात्मक पद्धति से प्रटकहुआ ज्ञानसमाज को उपयोगी होगा। अतः विषय समसामयिक है और समाजोपयोगी भी।

०.१० - वर्तमान ज्ञान में योगदान / Contribution to the existing knowledge

ऐसा नहीं है कि योगसूत्र और योगवासिष्ठ के विषयो की स्पष्टता आज नहीं है या उनके ग्रन्थ अनुपलब्ध हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि योगसूत्र को समझना और उसको उदाहरण इत्यादि के माध्यम से आत्मसात् करना अत्यन्त कठिन दिख पडता है। शोधगङ्गा पर कुछ महाप्रबन्ध प्राप्त होते हैं, जो योगवासिष्ठ और अन्यग्रन्थों पर प्रकाश डालते हैं। जैसे –

1) पातंजल योगसूत्र और श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित योग साधना मार्गों का तुलनात्मक अध्ययन –आर्य सोमवीर (2017) – गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार[1]
2) योगसूत्र, योगवासिष्ठ एवं श्रीमद्भगवद्गीता में अधिगम की अवधारणा, विवेचन एवं योगिक तकनीक –शशिकान्त मणि त्रिपाठी (2020), योग एवं आयुर्वेद विभाग – सनातन धर्म एवं भारतीय ज्ञान अध्ययन केन्द्र – साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, रायसेन, मध्यप्रदेश

योगसूत्र को लेकर भी कुछ अध्ययन दिखते हैं। जैसे –

Upload Date	Title	Researcher	Guide(s)
16-Mar-22	Patanjali yogasutras and kaivalyadarsanam of Swami Yukteswar Giri a comparison	*Mahesh, Chitrada*	Gayatri Devi, K

[1]https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/361311/4/1%20title%20page.pdf

08-Jun-20	Study of Personality And Its Development With Special Reference to Yogasutras of Patanjali	*MISRA ANURITA RATANJYOTI*	GANESH RAO N
30-Jun-23	Yogasutra Evam Charaksanhita me Darshnik Tatha Manovaigyanik Vichar Ek Tulnatmak Adhyayan	*Tripathi , Vijaya Narayan*	Shukla, H C
27-Dec-17	Relevance of yoga in modern time with special reference to patanjaliyogasutra A comprative and a critical study	*Shukla,Pooja*	Malek,Intajhusen
10-Oct-16	Patanjalayogasutra par Vyasbhasyaevamvigyanbhikshukrityogavartika ek alochanatmakevamtulnatmakadhyayan	*Guleria, Yogesh*	Sharma, Dhanraj
13-Oct-17	Study of the Yogasiddhantacandrika of narayana tirtha with reference to the chapter 1	*Endo, Ko*	Bapat, Shailaja
12-Jan-23	Critical Analysis of Kriya Yoga in Patanjala Yoga Sitra	*Prasad, Shyamala*	Sharma, B. R.
20-Apr-22	Meditation as a Source of Happiness_Focussing on the Experience of those Who Practice PatanjalaYogasutra	*Mishra, Arun*	Goure, Archana
06-Sep-22	Influence of yogadarsana on advaitavedanta_a study	*Maya, M S*	Maheswaran Nair, K
09-Feb-16	A critical study of human emotions documented in the Bhagavadgeta and pataijalayogasutra	*Ghaligi, Sripad. H.*	Devaki, H. P.

इन में योगसूत्र को आधार बनाकर कुछ व्यावारिक पक्ष पर चिन्तन किया गया है, परन्तु कहीं भी योगसूत्र और योगवासिष्ठ के सिद्धान्तों की तुलना नहीं की गई है। इससे विशेष पहले से ही

योगसूत्र पर अनेकानेक व्याख्याएं उपलब्ध हैं। वैसे ही योगवासिष्ठ पर व्याख्याएँ प्राप्त होती है। परन्तु दोनों में वर्णित सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन करके समालोचन कभी किया नहीं गया है। अतः यह संशोधन कार्य किसी भी संशोधन से भिन्न और पहले किये न गये कार्यों को ही लक्ष्य बनाता है।

०.११ - भविष्य की सम्भावनाएँ / Future work

गुणात्मक विश्लेषण की पीठ पर बैठ कर ही मात्रात्मक संशोधन अपने उद्देश्यों के अनुसार क्रियान्वयन कर सकता है। ऐसे में यदि योगसूत्रादि ग्रन्थों से वास्तविक और उदाहरणयुक्त गुणात्मक संशोधन का अभाव ही मात्रात्मक संशोधन में भी बाह्य आडम्बर और सतही ज्ञान के रूप में दिखता है। यदि यह संशोधन योगसूत्र और योगवासिष्ठ के सिद्धान्तों को ठीक ठीक उदाहरण के साथ उपस्थापित करता है, यौगिक मनोविज्ञान, यौगिक चिकित्सा, यौगिक प्रशिक्षण, यौगिक साधना, हठयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, राजयोग, लययोग, अद्वैत, परमात्मा, संसार, माया, जीव, ईश्वर इत्यादि विषय में गुणात्मक और मात्रात्मक संशोधन करना सरल हो जाएगा। ये संशोधन योगसूत्र और योगवासिष्ठ के सिद्धान्तों को एक साथ लागकर बोधगम्यता को बढा देगा, जिससे विद्यार्थीओं के अध्ययन और प्राध्यापकों के अध्यापन पर सीधा प्रभाव पडेगा और वह प्रभाव आगे जाकर संशोधन क्षेत्र में दिखेगा।

०.१२ - संशोधन की अवधि / Research Timeline

योगसूत्र में चार पाद हैं और 195 सूत्र हैं। इसकी बहुत व्याख्याएँ हैं, उसके साथ भी एक सहस्र पृष्ठ अनुमानित हैं, उसमें भी प्रत्येक सूत्र के लिए विविध व्याख्याओं में पुनरावर्तन देखा जाता है। अतः अधिकाधिक सहस्र पृष्ठ गिने जा सकते हैं। योगवासिष्ठ एक बहुत ही विशाल ग्रन्थ है। उसमें 29000 श्लोक हैं। यदि पृष्ठ के संबंध में देखें, तो तारा बुक एजेंसी वाराणसी से प्रकाशित हिन्दीटीका सहित योगवासिष्ठ के 5 खण्ड हैं। जिनमें आहत्य 3000 पृष्ठ हैं। इस प्रकार दो वर्षों में 4000 पृष्ठों को पढना और उनका तुलनात्मक और समालोचनात्मक अध्ययन करना मूलभूत कार्य होंगे। बाकि अन्य सन्दर्भ ग्रन्थों और विषयों को साथ साथ में जोडना भी एक महत्त्वपूर्ण पक्ष होगा। अतः अनुमानित रूप से 5000 पृष्ठों का अध्ययन करना तो अनिवार्य ही होगा। 5000 (पृष्ठ)/500(दिन) भी गिना जाए तो प्रतिदिन 10 पृष्ठ पढना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है।

मैं हाथ से लिखने का कार्य बहुत ही कम करता हूँ, अतः टङ्कण (टाइपिंग) कार्य करते करते 10 पृष्ठ की तुलना करने में दिन के 4 से 5 घण्टे पर्याप्त होंगे। इस प्रकार लकुलीश योग विश्वविद्यालय के अपने 10 के 4 के दायित्वों का निर्वहन करते हुए, मैं इस कार्य को कर सकता हूँ। मेरे लिये ऐसा नहीं होगा कि पुस्तक खोजना है या फिल्ड वर्क करना है। विद्यार्थी काल से ही योगसूत्र पढते आ रहाहूं, कुछ सालों से पढा भी रहा हूँ, तो बहुत सारे सिद्धान्त तो मस्तिष्क में बने हुए हैं। बस अब उनको योग्य ढांचे में डालना है और कुछ अदृष्ट सिद्धान्तों की तुलना एवं

समालोचन करना है। ये घडा बनाने के जैसा काम है, यहाँ भले ही कोई कार्य पहले होगा कोई बाद में, परन्तु मिट्टी, चक्का, पानी, कुम्हार और अग्नि समान रूप से हर समय सब चाहिये होगा। वैसे ही सब में सामञ्जस्य बनाते हुए मैं इस कार्य को पूर्ण करूंगा।